# ॥ २ - तारा महाविद्या स्तोत्र एवं कवचम् ॥

## अनुक्रमाणिका
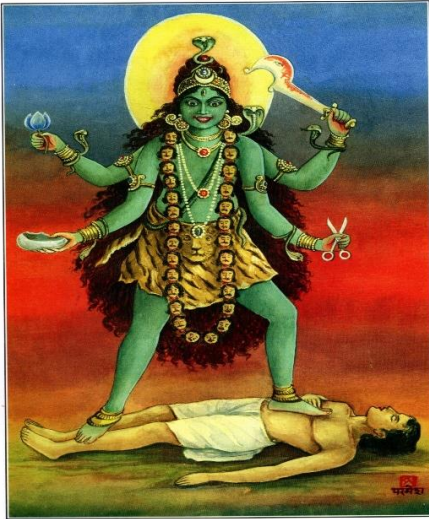


देवी तारा

तारा यन्त्र
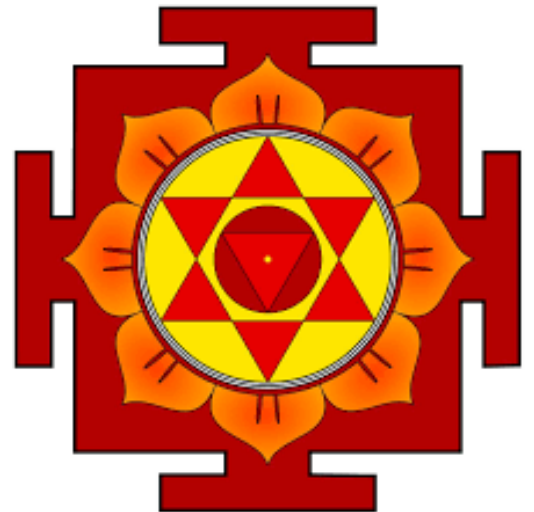
# ॥ देवी तारा ॥

दस महाविद्याओं में से माँ तारा की उपासना तंत्र साधकों के लिए सर्व-सिद्धि कारक मानी जाती है। देवी तारा को सूर्य प्रलय की अधिष्ठात्री देवी का उग्र रुप माना जाता है। शत्रुओं का नाश, वाक शक्ति की प्राप्ति, भोग मोक्ष की प्राप्ति तथा सौंदर्य और रूप ऐश्वर्य की देवी तारा की साधना की जाती है।

ये शवरूप शिवपर प्रत्यालीढ़ मुद्रा में आरूढ़ हैं भगवती तारा नीलवर्ण वाली, नीलकमलों के समान तीन नेत्रोंवाली तथा हाथों में कैंची, कपाल, कमल और खड्ग धारण करनेवाली हैं। ये व्याघ्रचर्मसे विभूषिता तथा कण्ठ में मुण्डमाला धारण करनेवाली हैं।

तारापीठ में देवी सती के नेत्र गिरे थे, इसलिए इस स्थान को नयन तारा भी कहा जाता है। यह पीठ पश्चिम बंगाल के बीरभूम जिला में स्थित है। इसलिए यह स्थान तारापीठ के नाम से विख्यात है। तारा माता के बारे में एक दूसरी कथा है कि वे राजा दक्ष की दूसरी पुत्री थीं।

तारा देवी का एक दूसरा मंदिर हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला से लगभग 13 किमी की दूरी पर स्थित शोघी में है। चीन, लद्दाख, तिब्बती बौद्ध धर्म के लिए भी हिन्दू धर्म की देवी 'तारा' का काफी महत्व है।

भारतमें सर्वप्रथम महर्षि वसिष्ठने ताराकी आराधना की थी। इसलिये ताराको वसिष्ठाराधिता तारा भी कहा जाता है। वसिष्ठने पहले भगवती तारा की आराधना वैदिक रीति से करनी प्रारम्भ की, जो सफल न हो सकी। उन्हें अदृश्य शक्ति से संकेत मिला कि वे तान्त्रिक-पद्धति के द्वारा जिसे 'चिनाचारा' कहा जाता है, उपासना करें। जब वसिष्ठ ने तान्त्रिक पद्धति का आश्रय लिया, तब उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई।

- **मेरोः पश्चिमकूले नु चोत्रताख्यो ह्रदो महान्।**
  **तत्र जज्ञे स्वयं तारा देवी नीलसरस्वती॥** स्वतन्त्रतन्त्र
  तारा का प्रादुर्भाव मेरु-पर्वत के पश्चिम भाग में 'चोलना' नाम की नदी के या चोलत सरोवर के तटपर हुआ था।

- **चैत्रे मासि नवम्यां तु शुक्लपक्षे तु भूपते।**
  **क्रोधरात्रिर्महेशानि तारारूपा भविष्यति॥** पुरश्चर्यार्णव भाग-३

चैत्र मास की नवमी तिथि और शुक्ल पक्ष के दिन तारा रूपी देवी की साधना करना तंत्र साधकों के लिए सर्वसिद्धि कारक माना गया है।

बिहार के सहरसा जिले में प्रसिद्ध 'महिषी' ग्राम में उग्रतारा का सिद्धपीठ विद्यमान है। वहाँ तारा, एकजटा तथा नीलसरस्वती की तीनों मूर्तियाँ एक साथ हैं। मध्य में बड़ी मूर्ति तथा दोनों तरफ छोटी मूर्तियाँ हैं। कहा जाता है कि महर्षि वसिष्ठ ने यहीं तारा की उपासना करके सिद्धि प्राप्त की थी।

तन्त्रशास्त्र के प्रसिद्ध ग्रन्थ 'महाकाल-संहिता के गुह्य-काली-खण्डमें महाविद्याओं की उपासना का विस्तृत वर्णन है, उसके अनुसार तारा का रहस्य अत्यन्त चमत्कार जनक है।

- मुख्य नाम — तारा।
- अन्य नाम — उग्र तारा, नील सरस्वती, एकजटा, कंकाल मालिनी।
- ८ स्वरूप नाम — १. तारा, २. उग्र तारा, ३. महोग्र तारा, ४. वज्र तारा, ५. नील तारा, ६. सरस्वती, ७. कामेश्वरी, ८. भद्र काली-चामुंडा।
- भैरव — अक्षोभ्य शिव, बिना किसी क्षोभ के हलाहल विष का पान करने वाले।
- विष्णु के अवतारों से सम्बद्ध — भगवान राम।
- कुल — काली कुल।
- दिशा — ऊपर की ओर।
- स्वभाव — सौम्य उग्र, तामसी गुण सम्पन्न।
- वाहन — गीदड़।
- तीर्थ स्थान या मंदिर — तारापीठ, रामपुरहाट, बीरभूम-पश्चिम बंगाल, भारत; सुघंधा-बांग्लादेश तथा सासाराम-बिहार भारत, जालन्धर पीठ कांगडा-वज्रेश्वरी देवी।
- कार्य — मोक्ष दात्री, भव-सागर से तारने वाली, सिद्धिदात्री, जन्म तथा मृत्यु के चक्र से मुक्त करने वाली।
- शारीरिक वर्ण — नीला।
- विशेषता — सिद्धविद्या।

## ॥ तारा माता जी का मंत्र ॥

- नोट : तारा महाविद्या साधना विधि आप बिना गुरु बनाये ना करें गुरु बनाकर व अपने गुरु से सलाह लेकर इस साधना को करना चाहिए। क्युकी बिना गुरु के की हुई साधना आपके जीवन में हानि ला सकती है।
- **मंत्र** **ॐ ह्रीं स्त्रीं फट्।**
- **मंत्र** **ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रीं तारायै नमः।**
- **मंत्र** **ऐं ॐ ह्रीं क्रीं हूँ फट।**
- **तारा मंत्र** **ॐ ह्रीं स्त्रीं हूँ फट्।** नीले कांच की माला से बारह माला प्रतिदिन।
- **एकजटा मंत्र** **ह्रीं त्री हुँ फट।**
- **नील सरस्वती मंत्र** **ह्रीं त्री हुँ।**
- **भय नाशक मंत्र** **ॐ त्रीम ह्रीं हुं।**
- **शत्रु नाशक मंत्र** **ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सौः हुं उग्रतारे फट।**
- **टोना नाशक मंत्र** **ॐ हुँ ह्रीं क्लीं सौः हुँ फट।**
- **सुरक्षा कवच मंत्र** **ॐ हुँ ह्रीं हुँ ह्रीं फट।**
- **लम्बी आयु का मंत्र** **ॐ हुं ह्रीं क्लीं हसौः हुं फट।**
- **मंत्र** **श्रीं ह्रीं स्त्रीं हूँ फट्।**
- **मंत्र** **ॐ ऐं ह्रीं स्त्रीं हूँ फट्।**
- **मंत्र** **ॐ ह्रीं आधारशक्ति तारायै पृथ्वीयां नमः पूजयीतो असि नमः।**
  इस मंत्र का पुरश्चरण 32 लाख जप है।
  जपोपरांत होम द्रव्यों से होम करना चाहिए।
  सिद्धि प्राप्ति के बाद साधक को तर्कशक्ति, शास्त्र ज्ञान, बुद्धि कौशल आदि की प्राप्ति होती है।

## ॥ तारा ध्यान एवं स्तुति ॥

- ध्यान

प्रत्यालीढपदां घोरां मुण्डमाला विभूषिताम ।
खर्व्वां लम्बोदरी भीमां व्याघ्रचर्मावृत्तां कटौ ॥ ॥ १ ॥

- नवयौवनसम्पन्नां पंचमुद्रा विभूषिताम ।
चतुर्भुजां लोलजिह्वां महाभीमां वरप्रदाम ॥ ॥ २ ॥
- खंग-कर्तृ-समायुक्त-सव्येतर भुजद्वयाम ।
कपोलोत्पलसंयुक्तसव्यपाणियुगान्विताम ॥ ॥ ३ ॥
- पिंगाग्रैकजटां ध्यायेन्मौलावक्षोभ्यभूषिताम ।
बालार्कमण्डलाकारलोचनत्रय भूषिताम ॥ ॥ ४ ॥
- ज्वलाच्चितामध्यगतां घोरदंष्ट्रा करालिनीम ।
स्वादेशस्मरेवदनां ह्यलंकार विभूषिताम ॥ ॥ ५ ॥
- विश्वव्यापकतोयान्तः श्वेतपद्मोपरिं स्थिताम ॥ ॥ ६ ॥

- ध्यान

प्रत्यालीढपदाप्पिताङ्घ्रि शवहृद्- घोराट्टहासापरा ।
खड्गेन्दीवरकर्त्रि खर्परभुजा हुंकारबीजोद्भवा ॥
खर्व्वा नील विशालपिंगलजटाजूटैकनागैर्युता ।
जाड्यन्न्यस्य कपालकर्तृजगतां हन्त्युग्र तारा स्वयम् ॥

## ॥ तारा स्तुति ॥

मातर्तीलसरस्वती प्रणमतां सौभाग्य-सम्पत्प्रदे प्रत्यालीढ-पदस्थिते शवह्यदि स्मेराननाम्भारुदे ।
फुल्लेन्दीवरलोचने त्रिनयने कर्त्रो कपालोत्पले खड्गञ्चादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये ॥

## ॥ तारा अष्टनामात्मक स्तोत्रम् ॥

- तारा च तारिणी देवी नाग-मुण्ड विभूषिता ।
ललज्जिह्वा नीलवर्णा ब्रह्मरूपधरा तथा ॥ ॥ १ ॥
- नामाष्टक मिदं स्तोत्रं य पठेत् श्रृणुयादपि ।
तस्य सव्वार्थसिद्धिः स्यात् सत्यं सत्यं महेश्वरि ॥ ॥ २ ॥

# ॥ तारा स्तोत्रम् - १ ॥

माँ तारा दस महा विद्याओं में से एक है। दूसरा स्थान माँ तारा का है। देवी अनायास ही वाक शक्ति प्रदान करने में समर्थ है। जिनके घर में भयंकर विपत्ति, भूत, प्रेत, पिशाच बाधा हो, बच्चे बुद्धिहीन हों, व्यापार में हानी होती हो तो इस स्तोत्र का पाठ नित्य प्रातः मध्यान्ह तथा सायं करने से, निः संदेह चमत्कारिक रुप से सब प्रकार की सुख शान्ति मिलती है।

- **मातर्नीलसरस्वति प्रणमतां सौभाग्यसम्पत्प्रदे**
  **प्रत्यालीढपदस्थिते शवहृदि स्मेराननाम्भोरुहे।**
  **फुल्लेन्दीवरलोचने त्रिनयने कर्त्रीकपालोत्पले**
  **खड्गं चादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये॥** ॥ १ ॥

- **वाचामीश्वरि भक्तिकल्पलतिके सर्वार्थसिद्धिश्वरि**
  **गद्यप्राकृतपद्यजातरचनासर्वार्थसिद्धिप्रदे।**
  **नीलेन्दीवरलोचनत्रययुते कारुण्यवारान्निधे**
  **सौभाग्यामृतवर्धनेन कृपयासिञ्च त्वमस्मादृशम्॥** ॥ २ ॥

- **खर्वे गर्वसमूहपूरिततनो सर्पादिवेषोज्वले**
  **व्याघ्रत्वक्परिवीतसुन्दरकटिव्याधूतघण्टाङ्किते।**
  **सद्यःकृत्तगलद्रजःपरिमिलन्मुण्डद्वयीमूर्द्धज-**
  **ग्रन्थिश्रेणिनृमुण्डदामललिते भीमे भयं नाशय॥** ॥ ३ ॥

- **मायानङ्गविकाररूपललनाबिन्द्वर्द्धचन्द्राम्बिके**
  **हुम्फट्कारमयि त्वमेव शरणं मन्त्रात्मिके मादृशः।**
  **मूर्तिस्ते जननि त्रिधामघटिता स्थूलातिसूक्ष्मा**
  **परा वेदानां नहि गोचरा कथमपि प्राज्ञैर्नुतामाश्रये॥** ॥ ४ ॥

- **त्वत्पादाम्बुजसेवया सुकृतिनो गच्छन्ति सायुज्यतां**
  **तस्याः श्रीपरमेश्वरत्रिनयनब्रह्मादिसाम्यात्मनः।**
  **संसाराम्बुधिमज्जने पटुतनुर्देवेन्द्रमुख्यासुरान्**
  **मातस्ते पदसेवने हि विमुखान् किं मन्दधीः सेवते॥** ॥ ५ ॥

- मातस्त्वत्पदपङ्कजद्वयरजोमुद्राङ्ककोटीरिणस्ते
  देवा जयसङ्गरे विजयिनो निःशङ्कमङ्के गताः ।
  देवोऽहं भुवने न मे सम इति स्पर्द्धां वहन्तः परे
  तत्तुल्यां नियतं यथा शशिरवी नाशं व्रजन्ति स्वयम् ॥ ॥ ६ ॥

- त्वन्नामस्मरणात्पलायनपरान्द्रष्टुं च शक्ता न ते
  भूतप्रेतपिशाचराक्षसगणा यक्षश्च नागाधिपाः ।
  दैत्या दानवपुङ्गवाश्च खचरा व्याघ्रादिका जन्तवो
  डाकिन्यः कुपितान्तकश्च मनुजान् मातः क्षणं भूतले ॥ ॥ ७ ॥

- लक्ष्मीः सिद्धिगणश्च पादुकमुखाः सिद्धास्तथा वैरिणां
  स्तम्भश्चापि वराङ्गने गजघटास्तम्भस्तथा मोहनम् ।
  मातस्त्वत्पदसेवया खलु नृणां सिद्ध्यन्ति ते ते गुणाः
  क्लान्तः कान्तमनोभवोऽत्र भवति क्षुद्रोऽपि वाचस्पतिः ॥ ॥ ८ ॥

- ताराष्टकमिदं पुण्यं भक्तिमान् यः पठेन्नरः ।
  प्रातर्मध्याह्नकाले च सायाह्ने नियतः शुचिः ॥ ॥ ९ ॥

- लभते कवितां विद्यां सर्वशास्त्रार्थविद्भवेत्
  लक्ष्मीमनश्वरां प्राप्य भुक्त्वा भोगान्यथेप्सितान् ॥ ॥१०॥

- कीर्तिं कान्तिं च नैरुज्यं प्राप्यान्ते मोक्षमाप्नुयात्
  विख्यातिं चैव लोकेषु प्राप्यान्ते मोक्षमाप्नुयात् ॥ ॥११॥

॥ इति श्री नील तन्त्रे तारा स्तोत्रम् / श्री महोग्रतारष्टक स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

# ॥ श्री तारा शतनाम स्तोत्रम् ॥

- **शिव उवाच**

तारिणी तरला तन्वी तारा तरुणवल्लरी ।
तीररूपा तरी श्यामा तनुक्षीणपयोधरा ॥ ॥ १ ॥

- तुरीया तरला तीव्रगमना नीलवाहिनी ।
  उग्रतारा जया चण्डी श्रीमदेकजटाशिरा: ॥ ॥ २ ॥
- तरुणी शाम्भवीछिन्नभाला च भद्रतारिणी ।
  उग्रा चोग्रप्रभा नीला कृष्णा नीलसरस्वती ॥ ॥ ३ ॥
- द्वितीया शोभना नित्या नवीना नित्यनूतना ।
  चण्डिका विजयाराध्या देवी गगनवाहिनी ॥ ॥ ४ ॥
- अट्टहास्या करालास्या चरास्या दितिपूजिता ।
  सगुणा सगुणाराध्या हरीन्द्रदेवपूजिता ॥ ॥ ५ ॥
- रक्तप्रिया च रक्ताक्षी रुधिरास्यविभूषिता ।
  बलिप्रिया बलिरता दुर्गा बलवती बला ॥ ॥ ६ ॥
- बलप्रिया बलरता बलरामप्रपूजिता ।
  अर्धकेशेश्वरी केशा केशवासविभूषिता ॥ ॥ ७ ॥
- पद्ममाला च पद्माक्षी कामाख्या गिरिनन्दिनी ।
  दक्षिणा चैव दक्षा च दक्षजा दक्षिणे रता ॥ ॥ ८ ॥
- वज्रपुष्पप्रिया रक्तप्रिया कुसुमभूषिता ।
  माहेश्वरी महादेवप्रिया पञ्चविभूषिता ॥ ॥ ९ ॥
- इडा च पिङ्गला चैव सुषुम्ना प्राणरूपिणी ।
  गान्धारी पञ्चमी पञ्चाननादि परिपूजिता ॥ ॥१०॥

- तथ्यविद्या तथ्यरूपा तथ्यमार्गानुसारिणी ।
  तत्त्वप्रिया तत्त्वरूपा तत्त्वज्ञानात्मिकाऽनघा ॥ ॥११॥

- ताण्डवाचारसन्तुष्टा ताण्डवप्रियकारिणी ।
  तालदानरता क्रूरतापिनी तरणिप्रभा ॥ ॥१२॥

- त्रपायुक्ता त्रपामुक्ता तर्पिता तृप्तिकारिणी ।
  तारुण्यभावसन्तुष्टा शक्तिर्भक्तानुरागिणी ॥ ॥१३॥

- शिवासक्ता शिवरतिः शिवभक्तिपरायणा ।
  ताम्रद्युतिस्ताम्ररागा ताम्रपात्रप्रभोजिनी ॥ ॥१४॥

- बलभद्रप्रेमरता बलिभुग्बलिकल्पिनी ।
  रामरूपा रामशक्ती रामरूपानुकारिणी ॥ ॥१५॥

- इत्येतत्कथितं देवि रहस्यं परमाद्भुतम् ।
  श्रुत्वा मोक्षमवाप्नोति तारादेव्याः प्रसादतः ॥ ॥१६॥

- य इदं पठति स्तोत्रं तारास्तुतिरहस्यकम् ।
  सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विहरेत् क्षितिमण्डले ॥ ॥१७॥

- तस्यैव मन्त्रसिद्धिः स्यान्ममसिद्धिरनुत्तमा ।
  भवत्येव महामाये सत्यं सत्यं न संशयः ॥ ॥१८॥

- मन्दे मङ्गलवारे च यः पठेन्निशि संयतः ।
  तस्यैव मन्त्रसिद्धिस्स्याद्गाणपत्यं लभेत सः ॥ ॥१९॥

- श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि पठेत्तारारहस्यकम् ।
  सोऽचिरेणैव कालेन जीवन्मुक्तः शिवो भवेत् ॥ ॥२०॥

- सहस्रावर्तनाद्देवि पुरश्चर्याफलं लभेत् ।
  एवं सततयुक्ता ये ध्यायन्तस्त्वामुपासते ।
  ते कृतार्था महेशानि मृत्युसंसारवर्त्मनः ॥ ॥२१॥

॥ इति स्वर्णमाला तन्त्रे ताराशतनाम स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

# ॥ श्री तारा अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम् ॥

- **देव्युवाच**

सर्वं संसूचितं देव नाम्नां शतं महेश्वर ।
यत्नैः शतैर्महादेव मयि नात्र प्रकाशितम् ॥ ॥ १ ॥

- पठित्वा परमेशान हठात् सिद्ध्यति साधकः ।
नाम्नां शतं महादेव कथयस्व समासतः ॥ ॥ २ ॥

- **भैरव उवाच**

शृणु देवि प्रवक्ष्यामि भक्तानां हितकारकम् ।
- यज्ज्ञात्वा साधकाः सर्वे जीवन्मुक्तिमुपागताः ॥ ॥ ३ ॥

- कृतार्थास्ते हि विस्तीर्णा यान्ति देवीपुरे स्वयम् ।
नाम्नां शतं प्रवक्ष्यामि जपात् स(अ)र्वज्ञदायकम् ॥ ॥ ४ ॥

- नाम्नां सहस्रं संत्यज्य नाम्नां शतं पठेत् सुधीः ।
कलौ नास्ति महेशानि कलौ नान्या गतिर्भवेत्॥ ॥ ५ ॥

- शृणु साध्वि वरारोहे शतं नाम्नां पुरातनम् ।
सर्वसिद्धिकरं पुंसां साधकानां सुखप्रदम् ॥ ॥ ६ ॥

- तारिणी तारसंयोगा महातारस्वरूपिणी ।
तारकप्राणहर्त्री च तारानन्दस्वरूपिणी ॥ ॥ ७ ॥

- महानीला महेशानी महानीलसरस्वती ।
उग्रतारा सती साध्वी भवानी भवमोचिनी ॥ ॥ ८ ॥

- महाशङ्खरता भीमा शाङ्करी शङ्करप्रिया ।
महादानरता चण्डी चण्डासुरविनाशिनी ॥ ॥ ९ ॥

- चन्द्रवद्रूपवदना चारुचन्द्रमहोज्ज्वला ।
एकजटा कुरङ्गाक्षी वरदाभयदायिनी ॥ ॥१०॥

- महाकाली महादेवी गुह्यकाली वरप्रदा ।
महाकालरता साध्वी महैश्वर्यप्रदायिनी ॥ ॥११॥

- मुक्तिदा स्वर्गदा सौम्या सौम्यरूपा सुरारिहा ।
शठविज्ञा महानादा कमला बगलामुखी ॥ ॥१२॥

- महामुक्तिप्रदा काली कालरात्रिस्वरूपिणी ।
  सरस्वती सरिच्छ्रेष्ठा स्वर्गङ्गा स्वर्गवासिनी ॥ ॥१३॥
- हिमालयसुता कन्या कन्यारूपविलासिनी ।
  शवोपरिसमासीना मुण्डमालाविभूषिता ॥ ॥१४॥
- दिगम्बरा पतिरता विपरीतरतातुरा ।
  रजस्वला रजःप्रीता स्वयम्भूकुसुमप्रिया ॥ ॥१५॥
- स्वयम्भूकुसुमप्राणा स्वयम्भूकुसुमोत्सुका ।
  शिवप्राणा शिवरता शिवदात्री शिवासना ॥ ॥१६॥
- अट्टहासा घोररूपा नित्यानन्दस्वरूपिणी ।
  मेघवर्णा किशोरी च युवतीस्तनकुङ्कुमा ॥ ॥१७॥
- खर्वा खर्वजनप्रीता मणिभूषितमण्डना ।
  किङ्किणीशब्दसंयुक्ता नृत्यन्ती रक्तलोचना ॥ ॥१८॥
- कृशाङ्गी कृसरप्रीता शरासनगतोत्सुका ।
  कपालखर्परधरा पञ्चाशन्मुण्डमालिका ॥ ॥१९॥
- हव्यकव्यप्रदा तुष्टिः पुष्टिश्चैव वराङ्गना ।
  शान्तिः क्षान्तिर्मनो बुद्धिः सर्वबीजस्वरूपिणी ॥ ॥२०॥
- उग्रापतारिणी तीर्णा निस्तीर्णगुणवृन्दका ।
  रमेशी रमणी रम्या रामानन्दस्वरूपिणी ॥ ॥२१॥
- रजनीकरसम्पूर्णा रक्तोत्पलविलोचना ।
  इति ते कथितं दिव्यं शतं नाम्नां महेश्वरि ॥ ॥२२॥
- प्रपठेद् भक्तिभावेन तारिण्यास्तारणक्षमम् ।
- सर्वासुरमहानादस्तूयमानमनुत्तमम् ॥ ॥२३॥
- षण्मासाद् महदैश्वर्यं लभते परमेश्वरि ।
  भूमिकामेन जप्तव्यं वत्सरात्तां लभेत् प्रिये ॥ ॥२४॥
- धनार्थी प्राप्नुयादर्थं मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ।
  दारार्थी प्राप्नुयाद् दारान् सर्वागमदितान् ॥ ॥२५॥

- अष्टम्यां च शतावृत्त्या प्रपठेद् यदि मानवः ।
  सत्यं सिद्ध्यति देवेशि संशयो नास्ति कश्चन॥ ॥२६॥
- इति सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं महेश्वरि ।
  अस्मात् परतरं नास्ति स्तोत्रमध्ये न संशयः ॥ ॥२७॥
- नाम्नां शतं पठेद् मन्त्रं संजप्य भक्तिभावतः ।
  प्रत्यहं प्रपठेद् देवि यदीच्छेत् शुभमात्मनः ॥ ॥२८॥
- इदानीं कथयिष्यामि विद्योत्पत्तिं वरानने ।
  येन विज्ञानमात्रेण विजयी भुवि जायते ॥ ॥२९॥
- योनिबीजत्रिरावृत्त्या मध्यरात्रौ वरानने ।
  अभिमन्त्र्य जलं स्निग्धं अष्टोत्तरशतेन च ॥ ॥३०॥
- तज्जलं तु पिबेद् देवि षण्मासं जपते यदि ।
  सर्वविद्यामयो भूत्वा मोदते पृथिवीतले ॥ ॥३१॥
- शक्तिरूपां महादेवीं शृणु हे नगनन्दिनि ।
  वैष्णवः शैवमार्गो वा शाक्तो वा गाणपोऽपि वा ॥ ॥३२॥
- तथापि शक्तेराधिक्यं शृणु भैरवसुन्दरि ।
  सच्चिदानन्दरूपाच्च सकलात् परमेश्वरात् ॥ ॥३३॥
- शक्तिरासीत् ततो नादो नादाद् बिन्दुस्ततः परम् ।
  अथ बिन्द्वात्मनः कालरूपबिन्दुकलात्मनः ॥ ॥३४॥
- जायते च जगत्सर्वं सस्थावरचरात्मकम् ।
  श्रोतव्यः स च मन्तव्यो निर्ध्यातव्यः स एव हि ॥ ॥३५॥
- साक्षात्कार्यश्च देवेशि आगमैर्विविधैः शिवे ।
  श्रोतव्यः श्रुतिवाक्येभ्यो मन्तव्यो मननादिभिः ॥ ॥३६॥
- उपपत्तिभिरेवायं ध्यातव्यो गुरुदेशतः ।
  तदा स एव सर्वात्मा प्रत्यक्षो भवति क्षणात् ॥ ॥३७॥
- तस्मिन् देवेशि प्रत्यक्षे शृणुष्व परमेश्वरि ।
  भावैर्बहुविधैर्देवि भावस्तत्रापि नीयते ॥ ॥३८॥

- भक्तेभ्यो नानाघासेभ्यो गवि चैको यथा रसः ।
  सदुग्धाख्यसंयोगे नानात्वं लभते प्रिये ॥ ॥३९॥
- तृणेन जायते देवि रसस्तस्मात् परो रसः ।
  तस्मात् दधि ततो हव्यं तस्मादपि रसोदयः ॥ ॥४०॥
- स एव कारणं तत्र तत्कार्यं स च लक्ष्यते ।
  दृश्यते च महादेन कार्यं न च कारणम् ॥ ॥४१॥
- तथैवायं स एवात्मा नानाविग्रहयोनिषु ।
  जायते च ततो जातः कालभेदो हि भाव्यते॥ ॥४२॥
- स जातः स मृतो बद्धः स मुक्तः स सुखी पुमान् ।
  स वृद्धः स च विद्वांश्च न स्त्री पुमान् नपुंसकः ॥ ॥४३॥
- नानाध्याससमायोगादात्मना जायते शिवे ।
  एक एव स एवात्मा सर्वरूपः सनातनः ॥ ॥४४॥
- अव्यक्तश्च स च व्यक्तः प्रकृत्या ज्ञायते ध्रुवम् ।
  तस्मात् प्रकृतियोगेन विना न ज्ञायते क्वचित् ॥ ॥४५॥
- विना घटत्वयोगेन न प्रत्यक्षो यथा घटः ।
  इतराद् भिद्यमानोऽपि स भेदमुपगच्छति ॥ ॥४६॥
- मां विना पुरुषे भेदो न च याति कथञ्चन ।
  न प्रयोगैर्न च ज्ञानैर्न श्रुत्या न गुरुक्रमैः ॥ ॥४७॥
- न स्नानैस्तर्पणैर्वापि नच दानैः कदाचन ।
  प्रकृत्या ज्ञायते ह्यात्मा प्रकृत्या लुप्यते पुमान् ॥ ॥४८॥
- प्रकृत्याधिष्ठितं सर्वं प्रकृत्या वञ्चितं जगत् ।
  प्रकृत्या भेदमाप्नोति प्रकृत्याभेदमाप्नुयात् ॥ ॥४९॥
- नरस्तु प्रकृतिर्नैव न पुमान् परमेश्वरः ।
  इति ते कथितं तत्त्वं सर्वसारमनोरमम् ॥ ॥५०॥

॥ इति श्री बृहन्नील तन्त्रे भैरव-भैरवी संवादे ताराशतनाम तत्त्वसार निरूपणं विंशः पटलः ॥

# ॥ नील सरस्वती स्तोत्रम् ॥

अगर आप भी अपने शत्रु के कारण परेशानियों का सामना कर रहे है तो आपके लिए यह नील सरस्वती स्तोत्र बहुत ही मददगार साबित होगा, इसके पाठ से हम अपने शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। यह स्तोत्र हमारे शत्रुओं का नाश करने में सक्षम है।

इस स्तोत्र को जो व्यक्ति अष्टमी, नवमी तथा चतुर्दशी के दिन अथवा प्रतिदिन इसका पाठ करता है उसके सभी शत्रुओं का नाश हो जाता है।

- **घोररूपे महारावे सर्वशत्रुभयंकरि।**
  **भक्तेभ्यो वरदे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ ॥ १ ॥**
- **ॐ सुरासुरार्चिते देवि सिद्धगन्धर्वसेविते।**
  **जाड्यपापहरे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ ॥ २ ॥**
- **जटाजूटसमायुक्ते लोलजिह्वान्तकारिणि।**
  **द्रुतबुद्धिकरे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ ॥ ३ ॥**
- **सौम्यक्रोधधरे रूपे चण्डरूपे नमोऽस्तु ते।**
  **सृष्टिरूपे नमस्तुभ्यं त्राहि मां शरणागतम् ॥ ॥ ४ ॥**
- **जडानां जडतां हन्ति भक्तानां भक्तवत्सला।**
  **मूढ़तां हर मे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ ॥ ५ ॥**
- **वं ह्रूं ह्रूं कामये देवि बलिहोमप्रिये नम:।**
  **उग्रतारे नमो नित्यं त्राहि मां शरणागतम् ॥ ॥ ६ ॥**
- **बुद्धिं देहि यशो देहि कवित्वं देहि देहि मे।**
  **मूढत्वं च हरेद्देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥ ॥ ७ ॥**
- **इन्द्रादिविलसदद्वन्द्ववन्दिते करुणामयि।**
  **तारे ताराधिनाथास्ये त्राहि मां शरणागतम् ॥ ॥ ८ ॥**
- **अष्टभ्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां य: पठेन्नर:।**
  **षण्मासै: सिद्धिमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा ॥ ॥ ९ ॥**
- **मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम्।**
  **विद्यार्थी लभते विद्यां विद्यां तर्कव्याकरणादिकम ॥१०॥**
- **इदं स्तोत्रं पठेद्यस्तु सततं श्रद्धयाऽन्वित:।**
  **तस्य शत्रु: क्षयं याति महाप्रज्ञा प्रजायते ॥ ॥११॥**
- **पीडायां वापि संग्रामे जाड्ये दाने तथा भये।**
  **य इदं पठति स्तोत्रं शुभं तस्य न संशय: ॥ ॥१२॥**
- **इति प्रणम्य स्तुत्वा च योनिमुद्रां प्रदर्शयेत ॥ ॥१३॥**

॥ इति नील सरस्वती स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ॥

## ॥ तारा कवचम् ॥

- दिव्यं हि कवचं देवि तारायाः सर्व्वकामदम् ।
  श्रृणुष्व परमं तत्तु तव स्नेहात् प्रकाशितम् ॥ ॥ १ ॥

- अक्षोभ्य ऋषिरित्यस्य छन्दस्त्रिष्टुबुदाहृतम् ।
  तारा भगवती देवी मंत्रसिद्धौ प्रकीर्तितम् ॥ ॥ २ ॥

- ॐ कारो मे शिरः पातु ब्रह्मारूपा महेश्वरी ।
  ह्रींकारः पातु ललाटे बीजरूपा महेश्वरी ॥ ॥ ३ ॥

- स्त्रीन्कारः पातु वदने लज्जारूपा महेश्वरी ।
  हुन्कारः पातु हृदये भवानी शक्ति रूपधृक् ॥ ॥ ४ ॥

- फट्कारः पातु सर्वांगे सर्वसिद्धि फलप्रदा ।
  नीला मां पातु देवेशी गंडयुग्मे भयावहा ॥ ॥ ५ ॥

- लम्बोदरी सदा पातु कर्णयुग्मं भयावहा ।
  व्याघ्र चर्मावृत्तकटिः पातु देवी शिवप्रिया ॥ ॥ ६ ॥

- पीनोन्नतस्तनी पातु पाशर्वयुग्मे महेश्वरी ।
  रक्त वर्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदाऽवतु ॥ ॥ ७ ॥

- ललज्जिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी ।
  करालास्या सदा पातु लिंगे देवी हरप्रिया ॥ ॥ ८ ॥

- विवादे कलहे चैव अग्नौ च रणमध्यतः ।
  सर्व्वदा पातु मां देवी झिण्टीरूपा वृकोदरी ॥ ॥ ९ ॥

- सर्व्वदा पातु मां देवी स्वर्गे मर्त्ये रसातले ।
  सर्व्वास्त्रभूषिता देवी सर्व्वदेव प्रपूजिता ॥ ॥१०॥

- क्री क्रीं हूं हुं फट् २ पाहि पाहि समन्ततः ॥ ॥११॥

- करालाा घोरदशना भीमनेत्रा वृकोदरी ।
  अट्टहासा महाभागा विघूर्णितत्रिलोचना ।
  लम्बोदरी जगद्धात्री डाकिनी योगिनीयुता ।
  लज्जारूपा योनिरूपा विकटा देवपूजिता ॥
  पातु मां चण्डी मातंगी ह्युग्रचण्डा महेश्वरी ॥ ॥१२॥

- जले स्थले चान्तरिक्षे तथा च शत्रुमध्यतः ।
  सर्व्वतः पातु मां देवी खड्गहस्ता जयप्रदा ॥ ॥१३॥

- कवचं प्रपठेद्यस्तु धारयेच्छृणुयादपि ।
  न विद्यते भयं तस्य त्रिष लोकेषु पाव्र्वति ॥ ॥१४॥